

सम्पादकीय

राजनीतिमुक्त रचनात्मक कार्यक्रम की दरकार

डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे

राजनीति और रचनात्मक कार्य में बहुत बुनियादी अंतर है। यद्यपि दोनों को एक-दूसरे का पूरक समझा जाता है। अधिकांश विद्वानों का विचार है कि राजनीति के माध्यम से जनता के बीच जो कार्य किए जाते हैं, वे रचनात्मक की श्रेणी में आते हैं। यह भी समझा जाता है कि राजनीति के द्वारा संचालित किए जाने वाले रचनात्मक कार्यों से पीड़ित-दुःखी जनता को कुछ राहत मिलती है। जबकि सर्वोदय विचार का मानना है कि रचनात्मक कार्य करने वालों को राजनीति में नहीं पड़ना चाहिए। रचनात्मक कार्य का आरंभ अंतिम पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति की भलाई को दृष्टि में रखकर किया जाता है, जबकि राजनीति हमेशा ही अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण के सिद्धांत पर आधारित होती है। महात्मा गांधी और संत विनोबा दोनों को ही सफाई कार्य सर्वाधिक प्रिय था। विनोबा ने तो सन् 1960 में नगर अभियान के अंतर्गत इन्दौर में एक माह बिताया और पूरे नगर में सफाई अभियान चलाया। वे स्वयं इन्दौर की बदबूदार और भयंकर गंदी गलियों में सफाई करने उतरे और नागरिकों को जागरूक किया। आज की तारीख में इन्दौर का नाम सर्वाधिक गंदे शहरों में शामिल है, जबकि साक्षरता के मामले में यह शहर शतप्रतिशत साक्षर कहलाता है। इन्दौर में रहकर ही विनोबा ने कस्तूरबागाम में सफाई पर व्याख्यान दिए, जिसकी बाद में 'शुचिता से आत्मदर्शन' नाम से पुस्तक प्रकाशित हुई। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी की जयंती से स्वच्छ भारत अभियान प्रारंभ किया है। ऐसा लगा कि पूरा देश एक साथ सड़कों पर उतर कर देश को एकदम साफ-सुथरा कर देगा। लेकिन यह काम इतना आसान है क्या? गांधीजी ने अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के लिए एक तरफ तो सत्याग्रह शास्त्र का विकास कर जनता के दिलों से मृत्यु के भय को

निकाला तो दूसरी ओर विधायक कार्य के रूप में जनता को अठारह रचनात्मक कार्यक्रम दिए। भारत में अस्पृश्यता महाअभिशाप रही है। इसलिए उन्होंने अस्पृश्यता मिटाने के लिए सफाई को सर्वोपरि माना। देश के आजादी आंदोलन में एक बड़े तबके को साथ में लाने के लिए सफाई एक रचनात्मक कार्य बना, जिसमें हजारों सवर्णों ने भाग लिया। आजादी आंदोलन के दौरान जातियों के बंधन ढीले हुए थे, लेकिन निजी स्वार्थों के चलते वे एक बार फिर मजबूत हो गए हैं। अभी तक अनुभव यही कहता है कि जब भी राजनीति ने रचनात्मक कार्य को अपने हाथ में लिया है, वह अपने लक्ष्य में कभी सफलता हासिल नहीं कर सका है। स्वच्छ भारत अभियान में देश के नागरिकों को शपथ भी दिलाई गई, जिसमें एक वाक्य है न मैं गंदगी करूंगा, न करने दूंगा। यह महात्मा गांधी के विचारों के बिलकुल विपरीत है। इसमें विनम्रता का भाव तिरोहित हो गया है। पड़ोसियों में साफ-सफाई को लेकर जब-तब झगड़े हो जाया करते हैं। 'न करने दूंगा' का समापन झगड़े में होने का अंदेशा हमेशा बना रहेगा। देश में कार्यरत विभिन्न संगठनों के लाखों स्वयं सेवक यदि स्वच्छ भारत का संकल्प लेते, तो आजादी के बाद जिस अस्पृश्यता का दंश हम भोग रहे हैं, वह कब का समाप्त हो चुका होता। अस्पृश्यता के खिलाफ कानून बना देने के बाद भी अत्याचारों में कोई कमी नहीं आई है। राजनीति से सत्ता तो बदली जा सकती है, लेकिन लोकमानस नहीं। लोकमानस बदलने के लिए राजनीतिमुक्त रचनात्मक कार्यक्रम ही चाहिए। शांतिसेना, आचार्यकुल और गोरक्षा सत्याग्रह से इस आकांक्षा की पूर्ति हो सकती है। सभी को दीप पर्व की हार्दिक बधाई।